जल संरक्षण आधारित बागवानी से किसानों की समृद्धि का मार्ग होगा प्रशस्त

पत्रिका
पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

बीकानेर. उद्यान विभाग की ओर से राष्ट्रीय बागवानी मिशन के तहत संरक्षण आधारित बागवानी-सतत विकास का मार्ग विषयक सेमिनार मंगलवार को स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के स्वामी विवेकानंद सभागार में आयोजित हुआ। मुख्य अतिथि स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय की निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. दीपाली धवन ने बताया कि जल संरक्षण आधारित बागवानी से ही किसानों की समृद्धि व खुशहाली का मार्ग प्रशस्त होगा। छात्र कल्याण निदेशक डॉ. एच एल देशवाल ने बताया कि मृदा नमी संरक्षण, वर्षा जल संचयन व सूक्ष्म सिंचाई तकनीक की ओर से जल संरक्षण को बढ़ावा देकर ही किसान आर्थिक रूप से सक्षम बन सकते हैं।

सेमिनार में मौजूद अधिकारी व किसान।

इस अवसर पर सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के उपनिदेशक हरिशंकर आचार्य ने राज्य सरकार की ओर से 2 वर्षों में किसान हित में उठाए गए विभिन्न ऐतिहासिक कदमों व उपलब्धियों की जानकारी दी। सहायक निदेशक उद्यान मुकेश गहलोत ने कहा कि किसान, जल संरक्षण तकनीकी बूंद-बूंद सिंचाई के महत्व को समझें। अगेती सब्जी फसल लेकर किसान समय पूर्व उपज प्राप्त कर अधिक आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। विश्वविद्यालय की सहायक निदेशक (जनसंपर्क) भाग्यश्री गोदारा ने किसानों के साथ विभिन्न राज्य योजनाओं के बारे में चर्चा की। केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान डॉ. हनुमान ने बताया कि किसान सुरक्षित खेती के महत्व को समझें। सेमिनार में जिले के 100 से अधिक युवा प्रगतिशील नवाचारी उद्यान किसानों ने भाग लिया।

क्षेत्रीय प्राथमिकताओं के अनुरूप तैयार होगा रोड मैप

बीकानेर. कृषि व पशुपालन से जुड़े विभिन्न संस्थानों के प्रतिनिधियों ने मंगलवार को स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में विचार विमर्श किया। इंडियन काउंसिल ऑफ एग्रीकल्चरल रिसर्च (आईसीएआर) के तहत आने वाले विभिन्न संस्थानों के प्रतिनिधियों की बैठक में क्षेत्र के किसानों तक कृषि व पशुपालन की आधुनिकतम तकनीक हस्तांतरण, उपलब्ध संसाधनों के कुशलतम उपयोग के लिए समन्वित प्रयासों पर चर्चा हुई। कुलगुरु डॉ. आरबी दुबे ने कहा कि कृषि तथा पशुपालन में आ रही चुनौतियों से निपटने के लिए किसानों तक तकनीक हस्तांतरण प्रशिक्षण महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि संसाधनों तथा सुविधाओं के संयुक्त उपयोग के लिए एक रोड मैप तैयार कर आईसीएआर भिजवाया जाएगा तथा उसके अनुरूप आपसी समन्वय से कार्य किया जाएगा। इसका प्रत्यक्ष लाभ कृषि विद्यार्थियों व किसानों को मिल सकेगा। अनुसंधान निदेशक डॉ. एन के शर्मा ने कहा कि बीज उत्पादन तथा स्थानीय जलवायु के अनुरूप अधिक उत्पादन देने वाली फसलों के अनुसंधान कार्य पर ध्यान देना होगा। राजुवास के अनुसंधान निदेशक डॉ. बी एन श्रृंगी ने समन्वित कृषि, पशुधन पोषण प्रबंधन व अन्य तकनीकों से जुड़े विषयों पर विचार रखे।

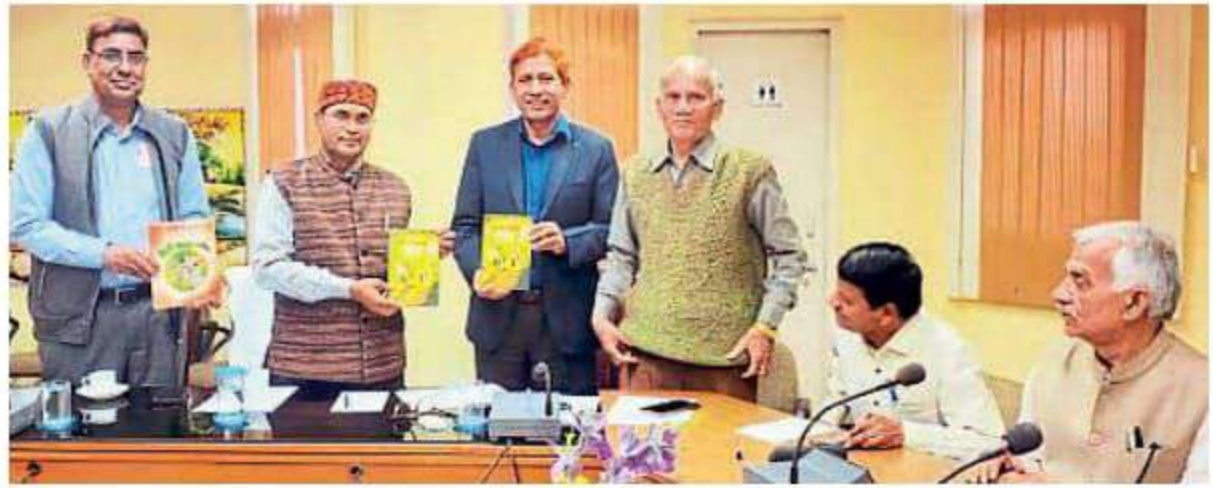

इन्होंने भी रखे सुझाव

बैठक में केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान के निदेशक डॉ. जगदीश राणे, केंद्रीय दलहन अनुसंधान केंद्र बीकानेर के सुधीर कुमार, काजरी बीकानेर के प्रभारी डॉ. नवरत्न पंवार, मूंगफली अनुसंधान के क्षेत्रीय केंद्र बीकानेर के प्रभारी डॉ. नरेंद्र कुमार तथा क्षेत्रीय भेड़ अनुसंधान केंद्र निदेशक निर्मला सैनी भी सुझाव रखे।

संसाधनों के कुशलतम उपयोग तथा किसानों के हित में कार्ययोजना बनाकर काम करेंगे आईसीएआर के संस्थान

एसकेआरएयू की अगुवाई में विभिन्न संस्थानों के प्रतिनिधियों की बैठक आयोजित

क्षेत्रीय प्राथमिकताओं के अनुरूप तैयार होगा रोड मैप

ओम एक्सप्रेस

बीकानेर। स्थानीय कृषि के सतत् विकास तथा किसानों की आमदनी बढ़ाने में सहयोग के लिए कृषि व पशुपालन से जुड़े विभिन्न संस्थानों के प्रतिनिधियों ने मंगलवार को स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में विचार विमर्श किया। इंडियन काउंसिल ऑफ एग्रीकल्चरल रिसर्च (आईसीएआर) के तहत आने वाले विभिन्न संस्थानों के प्रतिनिधियों की बैठक में क्षेत्र के किसानों तक कृषि व पशुपालन की आधुनिकतम तकनीक हस्तांतरण, उपलब्ध संसाधनों के कुशलतम उपयोग हेतु समन्वित प्रयासों पर चर्चा हुई।

एसकेआरएयू के कुलगुरु डॉ आर बी दुबे ने कहा कि स्थानीय जलवायुवीय परिस्थितियों के मद्देनजर किसान के लिए खेती को लाभकारी बनाने की दिशा में संबंधित संस्थानों को समन्वित क़दम उठाने की आवश्यकता है। कृषि तथा पशुपालन में आ रही चुनौतियों से निपटने के लिए किसानों तक तकनीक हस्तांतरण , प्रशिक्षण महत्वपूर्ण है। बीकानेर स्थित राष्ट्रीय स्तर के संस्थानों में बेहतरीन संसाधन उपलब्ध है। इन संसाधनों तथा सुविधाओं के संयुक्त उपयोग के लिए एक रोड मैप तैयार कर आईसीएआर भिजवाया जाएगा तथा उसके अनुरूप आपसी समन्वय से कार्य किया जाएगा। इसका प्रत्यक्ष लाभ कृषि विद्यार्थियों व किसानों को मिल सकेगा। अनुसंधान निदेशक डॉ एन के शर्मा ने कहा कि बीज उत्पादन तथा स्थानीय जलवायु के अनुरूप अधिक उत्पादन देने वाली फसलों के अनुसंधान कार्य पर ध्यान देना होगा । बीज उत्पादन बढ़ाने तथा वैरायटी रिप्लेसमेंट कार्य में सहयोग का सुझाव देते हुए शर्मा ने कहा कि संस्थानों की आधुनिकतम लैब सुविधाएं साझा हो, विद्यार्थियों तथा किसानों को हैंड्स ऑन ट्रेनिंग मिले , जिससे विद्यार्थी स्वरोजगार की दिशा में आगे बढ़ सकेंगे। उन्होंने कम पानी में जल्द पकने वाली तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता वाली स्थानीय फसलों के अनुसंधान की बात कही। राजुवास के अनुसंधान निदेशक डॉ बी एन श्रृंगी ने समन्वित कृषि,पशुधन पोषण प्रबंधन व अन्य तकनीकों से जुड़े विषयों पर विचार रखे। बैठक में केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान के निदेशक डॉ जगदीश राणे ने स्थानीय परिस्थितियों के फलों की अनुसंधान तकनीक साझा करने की बात कही। केंद्रीय दलहन अनुसंधान केंद्र बीकानेर के सुधीर कुमार, काजरी बीकानेर के प्रभारी डॉ नवरत्न पंवार, मूंगफली अनुसंधान के क्षेत्रीय केंद्र बीकानेर के प्रभारी डॉ नरेंद्र कुमार ने भी सुझाव दिए।

क्षेत्रीय भेड़ अनुसंधान केंद्र बीकानेर की निदेशक निर्मला सैनी ने कहा कि स्थानीय नस्ल की भेड़ और बकरियों में बहुत संभावनाएं हैं। पशुपालकों को ट्रेनिंग पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केंद्र के प्रतिनिधियों ने भी अपने विचार साझा किए।

बैठक में ऑल इंडिया कोऑर्डिनेटेड रिसर्च प्रोजेक्ट ऑन एरिड लैग्यूम के पूर्व कोऑर्डिनेटर डॉ डी कुमार ने भी विचार रखे । उन्होंने अपनी पुस्तक विश्वविद्यालय के कुल गुरु डॉ दुबे को भेंट की। कुलगुरु ने बताया कि सभी संस्थानों के प्रतिनिधियों से प्राप्त सुझावों के अनुरूप रोड मैप तैयार कर कार्य किया जाएगा।

जल संरक्षण आधारित बागवानी पर कृषक सेमिनार सम्पन्न

जल संरक्षण आधारित बागवानी से किसानों की समृद्धि व खुशहाली का मार्ग होगा प्रशस्त- डॉ धवन

राजस्थान प्रदीप रिपोर्टर

बीकानेर। उद्यान विभाग द्वारा राष्ट्रीय बागवानी मिशन के तहत %संरक्षण आधारित बागवानी-सतत विकास का मार्ग% विषयक सेमिनार मंगलवार को स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के स्वामी विवेकानंद सभागार में संपन्न हुआ।

दो दिवसीय सेमिनार के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय की निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ दीपाली धवन थी। उन्होंने बताया कि जल संरक्षण आधारित बागवानी से ही किसानों की समृद्धि व खुशहाली का मार्ग प्रशस्त होगा। छात्र कल्याण निदेशक डॉ एच एल देशवाल ने बताया कि मृदा नमी संरक्षण, वर्षा जल संचयन व सूक्ष्म सिंचाई तकनीक द्वारा जल संरक्षण को बढ़ावा देकर ही किसान आर्थिक रूप से सक्षम बन सकते है। इस अवसर पर सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के उपनिदेशक हरिशंकर आचार्य ने राज्य सरकार द्वारा 2 वर्षों में किसान हित में उठाए गए विभिन्न ऐतिहासिक कदमों व उपलब्धियों की जानकारी दी।सहायक निदेशक उद्यान मुकेश गहलोत ने कहा कि जिले में सब्जी उत्पादन की व्यापक संभावनाएं हैं। किसान, जल संरक्षण तकनीकी बूंद-बूंद सिंचाई के महत्व को समझें। अगेती सब्जी फसल लेकर किसान समय पूर्व उपज प्राप्त कर अधिक आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। विश्वविद्यालय की सहायक निदेशक (जनसम्पर्क) भाग्यश्री गोदारा ने किसानों के साथ विभिन्न राज्य योजनाओं के बारे में चर्चा की।

केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान डॉ. हनुमान ने बताया कि किसान सरक्षित खेती के महत्व को समझें। जल संरक्षण व बचत तकनीकी का उपयोग करते हुए पोली हाउस खेती से किसान समृद्ध व खुशहाल हो सकते हैं। कृषि अधिकारी उद्यान रमेश भाम्भू ने कृषि एवं उद्यानिकी विभाग द्वारा देय विभिन्न अनुदान योजनाओं के बारे में जानकारी दी। शुष्क बागवानी संस्थान के डॉ रामकेश मीणा ने अनार, बैर, सिट्रस, खजूर फल-बगीचा स्थापना की उन्नत तकनीकी के संदर्भ में बताया।

संयुक्त निदेशक उद्यान डॉ रेणु वर्मा ने बताया कि जल संरक्षण आधारित बागवानी वर्तमान समय की मांग है। किसान अधिक से अधिक सूक्ष्म सिंचाई, पॉली हाउस, लॉ-टनल, मल्चिंग जैसी जल सरंक्षित खेती को अपनाकर आमदनी को बढ़ावा दें।

सेमिनार में जिले के 100 से अधिक युवा प्रगतिशील नवाचारी उद्यान किसानों ने भाग लिया। कार्यक्रम में उद्यान विभागीय अधिकारी डॉ विजय कुमार बधाई, जोधराज कालीरावणा, लक्ष्मण सिंह शेखावत, अनिरूद्ध, पुष्पेन्द्र सिंह, धर्मपाल, बनवारीलाल सैनी, करणीदान चारण, ओमप्रकाश गोदारा, शिवभगवान इत्यादि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन सहायक निदेशक उद्यान मुकेश गहलोत ने किया।

जल संरक्षण आधारित बागवानी पर कृषक सेमिनार सम्पन्न

जल संरक्षण आधारित बागवानी से किसानों की समृद्धि व खुशहाली का मार्ग होगा प्रशस्त- डॉ दीपाली धवन

ओम एक्सप्रेस

बीकानेर। उद्यान विभाग द्वारा राष्ट्रीय बागवानी मिशन के तहत 'संरक्षण आधारित बागवानी-सतत विकास का मार्ग' विषयक सेमिनार मंगलवार को स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के स्वामी विवेकानंद सभागार में संपन्न हुआ। दो दिवसीय सेमिनार के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय की निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ दीपाली धवन थी। उन्होंने बताया कि जल संरक्षण आधारित बागवानी से ही किसानों की समृद्धि व खुशहाली का मार्ग प्रशस्त होगा। छात्र कल्याण निदेशक डॉ एच एल देशवाल ने बताया कि मृदा नमी संरक्षण, वर्षा जल संचयन व सूक्ष्म सिंचाई तकनीक द्वारा जल संरक्षण को बढ़ावा देकर ही किसान आर्थिक रूप से सक्षम बन सकते है। इस अवसर पर सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के उपनिदेशक हरिशंकर आचार्य ने राज्य सरकार द्वारा 2 वर्षों में किसान हित में उठाए गए विभिन्न ऐतिहासिक कदमों व उपलब्धियों की जानकारी दी।सहायक निदेशक उद्यान मुकेश गहलोत ने कहा कि जिले में सब्जी उत्पादन की व्यापक संभावनाएं हैं। किसान, जल संरक्षण तकनीकी बूंद-बूंद सिंचाई के महत्व को समझें। अगेती सब्जी फसल लेकर किसान समय पूर्व उपज प्राप्त कर अधिक आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। विश्वविद्यालय की सहायक निदेशक (जनसम्पर्क) भाग्यश्री गोदारा ने किसानों के साथ विभिन्न राज्य योजनाओं के बारे में चर्चा की। केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान डॉ. हनुमान ने बताया कि किसान सरक्षित खेती के महत्व को समझें। जल संरक्षण व बचत तकनीकी का उपयोग करते हुए पोली हाउस खेती से किसान समृद्ध व खुशहाल हो सकते हैं। कृषि अधिकारी उद्यान रमेश भाम्भू ने कृषि एवं उद्यानिकी विभाग द्वारा देय विभिन्न अनुदान योजनाओं के बारे में जानकारी दी। शुष्क बागवानी संस्थान के डॉ रामकेश मीणा ने अनार, बैर, सिट्रस, खजूर फल-बगीचा स्थापना की उन्नत तकनीकी के संदर्भ में बताया। संयुक्त निदेशक उद्यान डॉ रेणु वर्मा ने बताया कि जल संरक्षण आधारित बागवानी वर्तमान समय की मांग है। किसान अधिक से अधिक सूक्ष्म सिंचाई, पॉली हाउस, लॉ-टनल, मल्चिंग जैसी जल सरंक्षित खेती को अपनाकर आमदनी को बढ़ावा दें।

दैनिक भास्कर
बीकानेर 25-02-2026

कृषि विश्वविद्यालय और इग्नू के बीच हुआ एमओयू

अध्ययन केंद्र का अपग्रेडेशन, अब नए कोर्स शुरू करने की तैयारी

बीकानेर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय स्थित इग्नू अध्ययन केंद्र अब इग्नू के नियमित केंद्र के रूप में कार्य करेगा। कृषि विश्वविद्यालय तथा इग्नू के बीच इस संबंध में मंगलवार को एक एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए हैं। कुलगुरु डॉ. आरबी दुबे तथा इग्नू के जोधपुर कार्यालय की ओर से सहायक क्षेत्रीय निदेशक मुख्तियार अली ने इस एमओयू पत्र पर हस्ताक्षर किए। रजिस्ट्रार डॉ. देवाराम सैनी ने कहा कि इससे इग्नू सेवाओं का विस्तार होगा और विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को रेगुलर डिग्री के साथ इग्नू के ओपन पाठ्यक्रमों की डिग्री लेने का अवसर मिल सकेगा। इग्नू के मुख्तियार अली ने बताया कि इन पाठ्यक्रम में प्रवेश की अंतिम तिथि 28 फरवरी है। इग्नू के नियमित केंद्र बनने से बैचलर आफ आर्ट्स (होम साइंस)और मास्टर्स आफ आर्ट्स +होम साइंस) भी शुरू हो सकेगा। स्थानीय विद्यार्थी, सेवारत, एयरफोर्स , सेना सहित विभिन्न विद्यार्थी ओपन एजुकेशन के माध्यम से यहां प्रवेश प्राप्त कर सकते हैं। नियमित विद्यार्थी भी नियम अनुसार इग्नू के माध्यम से एक साथ दो डिग्री प्राप्त कर सकते हैं।

10 पाठ्यक्रम में 250 विद्यार्थी पंजीकृत

इग्नू के समन्वयक डॉ.दाताराम ने बताया कि वर्तमान में 10 पाठ्यक्रमों में लगभग 250 विद्यार्थी पंजीकृत है। डिप्लोमा इन अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन, डिप्लोमा इन न्यूट्रिशंस एंड हेल्थ एजुकेशन, एमएससी फूड सेफ्टी एंड क्वालिटी मैनेजमेंट एमबीए एग्री बिजनेस मैनेजमेंट, एमएससी एनवायर्नमेंट साइंस, सर्टिफिक्केट इन ऑर्गेनिक फार्मिंग, सर्टिफिक्केट इन डिजास्टर मैनेजमेंट, डिप्लोमा इन एग्रीकल्चरल कोस्ट मैनेजमेंट आदि में विद्यार्थी पंजीकरण करवा रहे हैं ।